ताईपिंग विद्रोह
(TAIPING REBELLION)

विद्रोह के कारण (Causes of the Rebellion)

इस विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे :

(अ) **चीन में विद्रोह की परम्परा**—चीन में प्रशासनिक अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार तथा असफलता के विरोध में विद्रोह की परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल से थी। चीनी जनता कन्फ्यूशियस के इस सिद्धान्त पर विश्वास करती थी कि "**जब कोई राजवंश शासन करने की शक्ति को खो देता है तो यह समझ लेना चाहिए कि ईश्वर ने अपने अधिकारों को वापस ले लिया है।**"[2] चीनी जनता सम्राट को अपना सम्प्रभु मानती थी, परन्तु यदि सम्राट निर्बल होता तो उसे सम्राट के पद पर ही बने रहने का कोई अधिकार नहीं था। चीन में इस प्रकार के विद्रोह हो चुके थे। 1796 से 1803 के '**श्वेत कमल समाज**' द्वारा पश्चिमी प्रान्तों में विद्रोह इसका स्पष्ट उदाहरण है। इस प्रकार विद्रोह की परम्परा से चीनी परिचित थे। इसी पृष्ठभूमि में चीनियों ने मंचू शासन के विरोध में विद्रोह किया था।

(ब) **परवर्ती मंचू शासकों की दुर्बलता**—चीन में मंचू वंश की स्थापना के साथ ही एक वर्ग ने यह प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया था कि "**चीन के स्वर्गिक साम्राज्य को मंचू वंश के शासन से मुक्ति दिलाना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि मंचू शासन चीन का हन्ता है।**" इस प्रकार मिंग शासन की पुनर्स्थापना के पक्षधरों ने भी कहना प्रारम्भ कर दिया था कि "**मंचू शासन को मार भगाओ तथा मिंग वंश की पुनः स्थापना करो।**"[3] प्रारम्भिक मंचू शासक योग्य थे, अतः उन्होंने स्थिति को नियन्त्रित रखा, परन्तु परवर्ती मंचू शासक अयोग्य एवं शक्तिहीन

सिद्ध हुए। ताओ कुआंग जिसने 1820 से 1850 तक शासन किया, उसके शासन काल में चीन प्रथम अफीम युद्ध में पराजित हुआ। वास्तव में, पश्चिमी साम्राज्य का साम्राज्यवादी पंजा जिस प्रकार चीन की लूट-खसोट के लिए उतावला एवं तत्पर था उससे जूझने की शक्ति 1839-42 ई. तक प्रथम आंग्ल-चीनी युद्ध में पराजित चीन में नहीं रह गई थी। परवर्ती मंचू शासक न तो पश्चिमी साम्राज्यवादी पिपासा से चीन को बचा पाये और न ही चीन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्था से। जिस समय ताईपिंग विद्रोह हुआ था, उस समय चीन में सिएन फेंग नामक अत्यन्त दुर्बल शासक था।

(स) आन्तरिक अव्यवस्था—सिएन फेंग के निर्बल शासन काल में भ्रष्टाचार की जिस गति से वृद्धि हो रही थी, उससे प्रशासनिक एवं सैनिक अधिकारियों में विलासिता की भावना घर कर गई। अतः राजकीय अधिकारी अपने नैतिक कर्तव्यों से गिर गए। अतः देश में अव्यवस्था एवं अशान्ति फैल गई। मंचू शासक इस अव्यवस्था से उत्पन्न समुद्री डाकुओं एवं लुटेरों की बढ़ती गतिविधियों को रोक पाने में असमर्थ रहे, क्योंकि प्रान्तों के अधिकारों पर उनका नियन्त्रण नहीं के बराबर रह गया। **यही कारण था कि हुनान प्रान्त में चावल के निर्यात को रोकने के उद्देश्य से 1843 में विद्रोह हुआ।** 1844 में फारमोसा में विद्रोह हुआ। क्वांगतुंग एवं हुनान में लगातार अराजकता की स्थिति बनी रही।

(द) सामाजिक एवं आर्थिक असन्तोष—चीन की जर्जरित सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्था ने ताईपिंग विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की। वास्तव में, ताईपिंग विद्रोह के समय चीनी समाज मूलतः दो वर्गों में विभक्त हो गया। **प्रथम वर्ग** में निर्धन, कृषक, निर्धन मध्यम वर्ग एवं ग्रामीण सर्वहारा वर्ग था तो **द्वितीय वर्ग** में व्यावसायिक एवं शासकीय प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध उच्च अधिकारी तथा सम्पन्न वर्ग था। प्रथम वर्ग का जिस प्रकार सम्पन्न वर्ग द्वारा शोषण किया जा रहा था उससे प्रथम वर्ग में अत्यन्त असन्तोष था। ताईपिंग विद्रोह ने एक नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने का दावा किया था। अतः निर्धन व असहाय निर्बल वर्ग ने खुले रूप में सम्पन्न वर्ग का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया था।

निर्बल एवं निर्धन वर्ग की विरोधी विचारधारा को जर्जरित आर्थिक स्थिति ने और अधिक झकझोर दिया। चीन में जनसंख्या का अनुपात जिस गति से बढ़ रहा था, उस अनुपात में कृषि का उत्पादन नगण्य ही था। **जनसंख्या के तीव्र विकास ने कृषि पर दबाव डाल दिया, परन्तु कृषि के साधन परम्परावादी बने रहने से कृषि व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ था।** अतः कृषि से जीवन निर्वाह एक कठिन प्रश्न बन गया था। राजकीय करों एवं साहूकारों के करों से कृषक दब चुका था। आंग्ल-चीनी युद्ध में चीन की पराजय ने चीन की आर्थिक स्थिति को और खराब कर दिया। नानकिंग की सन्धि के अनुबन्धों के आधार पर चीन को जो क्षतिपूर्ति अदा करनी थी, उसकी पूर्ति के लिए चीनी सरकार ने राजकीय करों में वृद्धि की। इसका सीधा प्रभाव कृषक वर्ग पर पड़ा। वह साहूकार से ऋण लेने को विवश हो गया। **ऋण की अदायगी न कर पाने पर उसे अपनी भूमि भी बेचनी पड़ी। अतः अनेक उद्दण्ड गुटों का निर्माण हुआ जिन्होंने लूटमार को अपना पेशा बनाया।** इधर अफीम का आयात जिस प्रकार चीन में बढ़ रहा था उससे चांदी के सिक्के विदेशों को जा रहे थे। राजकीय कार्य चांदी के सिक्कों पर अवलम्बित थे। अतः चीन अत्यन्त निराशाजनक आर्थिक स्थिति के कगार पर खड़ा हो गया।

(य) दक्षिण चीन में दुर्भिक्ष एवं बाढ़ का प्रकोप—चीन की दुर्बल आर्थिक स्थिति पर 1846-47 में क्वांगशी, हुनान एवं क्वांगतुंग में लगातार होने वाले दुर्भिक्ष एवं बाढ़ ने तीव्र घातक प्रहार किया। मंचू शासक बाढ़ व दुर्भिक्ष से पीड़ित लोगों की सहायता कर पाने में असमर्थ रहे। अतः दक्षिणी चीन में गरीबी, महामारी एवं उत्पीड़न का जो भीषण जानलेवा दौर चल रहा था, उसने जन असन्तोष को जन्म दिया।

(र) गुप्त समितियों की क्रियाशीलता—केन्द्रीय शासन की निर्बलता ने चीन में अनेक समितियों के जन्म में योगदान दिया। **पाइल्यान-चिकाओ, सान हो हुई, थिएन ती हुई तथा हुंग मेन** प्रमुख गुप्त समितियां थीं। ये गुप्त समितियां क्रान्तिकारी विचारों से ओतप्रोत थीं तथा इन्होंने अपने-अपने छोटे-छोटे संगठन बना लिये थे। **नानकिंग की अपमानजनक सन्धि इनके लिए असह्य थी।** चीन में विदेशी हस्तक्षेप एवं विदेशियों की उपस्थिति का इन संगठनों ने विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। प्रशासनिक निर्णयों का विरोध करने के लिए इन समितियों ने अपने-अपने सैनिक संगठन भी कायम कर लिये थे। अतः ये गुप्त समितियां ताईपिंग विद्रोह की उग्रता में विशेष सहयोगी रहीं।

(ल) **सैन्य दुर्बलता**—मंचू शासन सैनिक तन्त्र पर आधारित था। अतः प्रारम्भिक मंचू शासकों ने सैन्य संगठन एवं सैन्य व्यवस्था पर विशेष बल दिया था, परन्तु उत्तरवर्ती मंचू शासन काल में प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार ने सैन्य संगठन को भी प्रभावित किया। **अनेक सैनिक पदाधिकारियों ने सैनिकों को मिलने वाले वेतन को स्वयं रखना प्रारम्भ कर दिया।** निरीक्षण के समय मजदूरों व कुलियों को भर्ती किया जाने लगा। सैन्य प्रशिक्षण की कार्यकुशलता नष्ट होने लगी। सर्वसाधारण का विश्वास सेना पर से उठ गया। इस विश्वास को प्रथम अफीम युद्ध ने और पक्का कर दिया। अतः गुप्त समितियों के हृदय से प्रशासनिक सेना का भय समाप्त हो गया और वे विद्रोह के लिए पूर्ण मनोवेग से कटिबद्ध हो गए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मंचू शासन के विरोध में चीन में एक सम्मिलित प्रतिक्रिया जन्म ले रही थी। इस प्रतिक्रिया के मूल में मंचू शासन की समाप्ति एवं विदेशी हस्तक्षेप से चीन की मुक्ति प्रमुख उद्देश्य था। जनता भ्रष्टाचार, आर्थिक असन्तोष एवं सामाजिक अव्यवस्था से ऊब चुकी थी और एक नई व्यवस्था की इच्छुक थी।

ताईपिंग विद्रोह का प्रसार
(SPREAD OF TAIPING REBELLION)

अतः उक्त परिस्थितियों में अनुकूल स्थिति देखकर हुंग हसिऊ चुआन (Hung Hsiu Chuan) ने शांग ती हुई (ईश्वर पूजकों की संस्था) नामक समिति का गठन कर मंचू प्रशासन की नीतियों के विरोध में 1851 ई. में विद्रोह कर दिया जो कि इतिहास में **ताईपिंग के विद्रोह** के नाम से जाना जाता है। हुंग ने स्वयं को इसी का अनुज कहना प्रारम्भ किया एवं यह घोषित किया कि ईश्वर ने उसे भ्रष्ट मंचूओं के शासन का अन्त करने के लिए भेजा है। उसने एक **नूतन शान्ति व्यवस्था पूर्णशान्ति** (Taiping—Perfect peace) की स्थापना का दावा किया।

हुंग की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और उसके अनुयायियों की संख्या तीस हजार तक जा पहुंची। अतः मंचू प्रशासन के कान खड़े होना स्वाभाविक था। अतः शाही सैनिकों को हुंग के आन्दोलन को कुचलने के आदेश दे दिए गए, परन्तु ताईपिंग विद्रोहियों ने 25 सितम्बर, 1851 ई. को यूनान पर अधिकार कर **तेपिंग-ती एन कुओ** (महान शान्ति का दैवी साम्राज्य) की घोषणा कर दी। इसके उपरान्त विद्रोहियों ने हुवान एवं नानकिंग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

ताईपिंग विद्रोहियों की उक्त सफलताएं क्षणिक सिद्ध हुईं। 1864 तक तो विद्रोह में गतिशीलता बनी रही, परन्तु इसकी गतिशीलता ने विदेशी शक्तियों के कान खड़े कर दिये। विदेशी शक्तियां अपने हितों के लिए मंचू प्रशासन को चीन में स्थिर देखना चाहती थीं। **अतः विदेशी शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस एवं अमेरिका) ने मंचू प्रशासन के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि यदि चीन 30 लाख ताएल विदेशी शक्तियों को दे तो वे ताईपिंग का दमन करने को तैयार हैं, मंचू प्रशासन ने इसकी स्वीकृति दे दी।** अतः विदेशी शक्तियों की सेनाओं ने ताईपिंग विद्रोहियों का दमन प्रारम्भ कर दिया। 1863 में विदेशी सेना ने सुचाऊ पर अधिकार कर लिया। 1864 में नानशिंग विद्रोहियों से खाली करा दिया गया। 1864 में इस असफलता से दुखी होकर ताईपिंग विद्रोह के नेता हुंग हसिऊ चुआन ने आत्महत्या कर ली और विद्रोह का अन्त हो गया।

ताईपिंग विद्रोह की प्रकृति
(NATURE OF TAIPING REBELLION)

ताईपिंग विद्रोह की प्रकृति के विषय में इतिहासविद् क्लाइड की धारणा है कि "**यह आन्दोलन एक किसान विद्रोह था, धार्मिक एवं नैतिक आन्दोलन था, उस वंश के प्रति विद्रोह था जिसके कि ईश्वरीय अधिकारों का हनन हो गया प्रतीत होता था।**"[1] ओवेन एवं लेटीमोर ने इसे "**अंशतः कृषक क्रान्ति एवं मंचू सरकार के विरोध में राष्ट्रीय जागृति की संज्ञा दी है।**"[2] वस्तुतः आलोचनात्मक परीक्षण स्पष्ट करता है कि ताईपिंग विद्रोह अपने प्राकृतिक रूप में तीन तथ्यों को स्पष्ट करता है। **प्रथम** तो स्पष्ट रूप से यह मंचू शासन का विरोधी था। **द्वितीय**, यह विदेशी हस्तक्षेप के विरोध में था एवं **तृतीय**, चीनी राष्ट्रीयता का संकेत था।

वास्तव में, मंचू प्रशासन में देश की सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्था का सीधा प्रभाव कृषकों पर पड़ा था। अतः इस विरोध में किसानों ने भाग लिया था। विदेशी प्रभाव जिस गति से चीन में बढ़ रहा था उससे

चीन की अर्थव्यवस्था को आघात तो लग ही रहा था साथ ही चीन की राष्ट्रीयता का अपमान भी हो रहा था। अब प्रश्न यह उठता है कि प्रारम्भ में विदेशी शक्तियों ने इस विद्रोह को चलते क्यों रहने दिया? जबकि यह विदेशी हस्तक्षेप के विरोध में एक आवाज था। इस बात को स्पष्ट करते हुए फारबेंक ने लिखा है, **"वास्तव में, प्रारम्भ में विदेशी शक्तियों व व्यापारियों का यह विचार था कि ताईपिंग सिद्धान्त ईसाई धर्म से लिये गये हैं। अतः यह विद्रोह पश्चिम के व्यापारियों के लिए चीन का दरवाजा खोलने की एक दैवीय योजना है। इस योजना से मंचू वंश का पतन होगा ही साथ ही चीन ईसाई गणराज्य के रूप में सामने आयेगा।"**[1] परन्तु विदेशी शक्तियों एवं व्यापारियों के दृष्टिकोण में शीघ्र ही तब महान परिवर्तन आया, जब उन्होंने ताईपिंग विद्रोह की वास्तविकता को जाना। वास्तव में विद्रोहियों ने विदेशों से अपने व्यापार को शस्त्र एवं बारूद क्रय करने तक सीमित रखने का उद्देश्य रखा था, जिससे उन्हें युद्ध सामग्री समय-समय पर प्राप्त होती। इससे विदेशियों को कोई लाभ नहीं होना था। अतः कालान्तर में विदेशी शक्तियों ने इस विद्रोह का मिलकर दमन किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ताईपिंग विद्रोह मंचू प्रशासन की नीतियों के विरोध में एक ऐसा राष्ट्रीय जागृति से युक्त आन्दोलन था जो कि विदेशी हस्तक्षेप को सहन नहीं कर सकता था और जिसमें चीनी समाज के शोषित वर्ग ने विशेष रूप से भाग लिया था।

ताईपिंग विद्रोह की असफलता के कारण
(CAUSES OF THE FAILURE OF THE TAIPING REBELLION)

ताईपिंग विद्रोह निश्चित उद्देश्यों एवं कार्यक्रम को लेकर प्रारम्भ हुआ था और इसे जनसमर्थन भी प्राप्त था। ऐसी परिस्थिति में भी विद्रोह असफल हो गया। **वास्तव में, इसकी असफलता के निम्नलिखित कारण थे :**

(अ) सैनिक कारण—विद्रोहियों को जब तक मात्र शाही मंचू सेना का सामना करना पड़ा तब तक तो वे सफलता प्राप्त करते गये, परन्तु जैसे ही रूस, फ्रांस, इंगलैण्ड एवं अमेरिका की संयुक्त सेना ने विद्रोहियों का दमन करना प्रारम्भ किया, विद्रोह असफल होते गये। वास्तव में, विदेशी सेना एवं शस्त्रों से लड़ने वाली शाही सेना को परास्त करना कठिन था। यह ठीक है कि विद्रोही उत्साही, निर्भीक एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थे, परन्तु विद्रोहियों में योग्य सैन्य संचालन एवं शस्त्रास्त्रों का नितान्त अभाव था।

(ब) धार्मिक कारण—हुंग हसिऊ चुआन ने चीन में पूर्ण शान्ति स्थापित करने के लिए जिस नवीन दर्शन की कल्पना की थी उसके मूल सिद्धान्तों में ईसाई भावना की गन्ध थी। **चीनी जनता अभी भी ताओ एवं कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तों पर विश्वास रखती थी।** अतः मंचू सैनिकों ने लोगों की धार्मिक भावनाओं को उकसाया। फलस्वरूप विद्रोहियों को मिलने वाला जन समर्थन धीरे-धीरे कम होता चला गया। वास्तव में, विद्रोही नेता ने स्वयं को ईसा का अनुज बताकर भयंकर भूल की थी।

(स) ताईपिंग विद्रोही सेनाओं का चारित्रिक हनन—प्रारम्भ में ताईपिंग नेता व प्रमुख विद्रोहियों ने जिस स्वर्गिक चीन की कल्पना की थी उसमें भ्रष्टता को नामोनिशान मिटाने का दावा था। नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा थी, परन्तु शनैः-शनैः विद्रोही नेता व उसके प्रमुख अनुयायी चारित्रिक दोषों में लिप्त हो गये। हुंग हसिऊ चुआन को इस बात का गर्व था कि उसके हरम में 2,000 स्त्री परिचारिकाएं तथा 64 रानियां थीं। नौकरशाही को कालान्तर में जिस प्रकार बल मिला उससे सैन्य क्षमता तथा योग्यता का हनन हुआ। आमोद-प्रमोद एवं वैभवशालिता के लिए जिस प्रकार धन वसूला गया वह सामान्य जनता के लिए अत्यन्त दुखद था। **इस प्रकार ताईपिंग नेता एवं उसके अनुयायियों के सिद्धान्तों एवं व्यवहार में सिद्धान्तों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण विरोधाभास आ गया।**[2]

(द) विद्रोही नेता की मृत्यु—1864 ई. में नानकिंग पर विदेशी शक्तियों के अधिकार हो जाने से घबराकर विद्रोही नेता हुंग हसिऊ चुआन ने आत्महत्या कर ली। उसके पश्चात् विद्रोहियों को संगठित करने वाला कोई व्यक्तित्व नहीं रहा। अतः नेतृत्व के अभाव में विद्रोह का अन्त हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ताईपिंग विद्रोह की असफलता के लिए स्वयं विद्रोहियों का चारित्रिक पतन अत्यन्त उत्तरदायी था। उन्होंने जिन उद्देश्यों को सामने रखकर अपने कार्य को प्रारम्भ किया था, उन्होंने उसे

व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित नहीं किया। ताईपिंग स्वयं ही भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, प्रान्तीयता, विलासिता, एवं अनुदारवादिता में लिप्त हो गये।

ताईपिंग विद्रोह के परिणाम
(RESULTS OF TIAPING REBELLION)

विदेशी शक्तियों का सहयोग प्राप्त कर मंचू शासक ने ताईपिंग विद्रोह का दमन अवश्य कर दिया, परन्तु इसके दूरगामी परिणामों से इन्कार नहीं किया जा सकता। **इस विद्रोह के निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिणाम निकले :**

(अ) **चीन की कम्यून प्रथा का पूर्वगामी स्वरूप**—1854 ई. में ताईपिंग विद्रोहियों ने नानकिंग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और 1864 ई. तक उन्होंने नानकिंग पर अपना आधिपत्य जमाये रखा। इन 10 वर्षों में विद्रोहियों ने नानकिंग पर अपना शासन चलाया। शासन संचालन 6 समितियों द्वारा सम्पादित होता था। **परिवारों का संगठन कर एक प्रशासनिक इकाई बनाई गई। इस प्रशासनिक इकाई को स्वायत्त शासन प्राप्त था।** आर्थिक जीवन के पहलुओं को निर्धारित करने के लिए सहकारी समितियों का गठन किया गया। वास्तव में, प्रशासन के सम्बन्ध में विद्रोहियों का यह कार्य चीन की कम्यून प्रथा का पूर्वगामी स्वरूप माना जा सकता है।

यही नहीं, भूमि सुधार के सम्बन्ध में भी इसी विद्रोह ने चीन की साम्यवादी व्यवस्था की पृष्ठभूमि तैयार की। ताईपिंग शासन ने घोषित किया कि "**भूमि पर किसानों का अधिकार है, क्योंकि उस पर वे खेती करते हैं।**" भूमि का राष्ट्रीयकरण कर उसे आवश्यकतानुसार परिवारों में विभाजित किया गया। उत्पन्न फसल से परिवार अपना भरण-पोषण करता एवं अतिरिक्त फसल सामूहिक गोदामों में रखने की व्यवस्था की गई। वास्तव में, इस धारणा ने व्यक्तिवादी भावना के स्थान पर, साम्यवादी भावना को जन्म दिया।

(ब) **राष्ट्रीयता की भावना का विकास**—ताईपिंग विद्रोह ने चीन के जनमानस में राष्ट्रीय भावना को उद्वेलित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया। चीनी अब खुलकर विदेशियों के बहिष्कार की बात करने लगे तथा मंचू सरकार को विदेशियों के हाथ की कठपुतली मानने लगे।

(स) **चीन में विदेशी प्रभुत्व का बढ़ना**—ताईपिंग विद्रोह को कुचलने के लिए विदेशी शक्तियों ने चीन में हस्तक्षेप किया था। विद्रोह दमन के पश्चात् सरकार पर विदेशी प्रभुत्व गहराता गया। रूस, इंगलैण्ड, फ्रांस एवं जर्मनी ने चीन की विदेश नीति, आन्तरिक प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था में अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। इससे चीन का सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास अवरुद्ध हो गया।

(द) **स्त्रियों की दशा सुधारने का प्रयत्न**—ताईपिंग विद्रोहियों ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने का भी प्रयत्न किया। औरतों के पैर बांधकर रखने की प्रथा का उन्होंने अपने शासन में अन्त किया। स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा एवं साम्पत्तिक अधिकार दिये गये। स्त्रियों के क्रय-विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाया गया। इस प्रकार चीन में स्त्रियों की स्वतन्त्रता का आभास ताईपिंग विद्रोह की देन है।

(य) **नई कर पद्धति का जन्म**—ताईपिंग विद्रोह के समय चीन की सरकार भीषण आर्थिक संकट में फंस गई। अतः उससे उबरने के लिए मंचू सरकार ने '**आन्तरिक पारगमन कर**' लगाया। इस कर ने चीन के औद्योगिक विकास को अवरुद्ध कर दिया।

(र) **चीन की अपार क्षति**—ताईपिंग विद्रोह का दमन करने के लिए जिस तरह विदेशी शक्तियों का आश्रय लिया गया उससे चीन का आन्तरिक जीवन अव्यवस्थित हो गया। स्थान-स्थान पर विद्रोह होने लगे। गरीबी, भुखमरी एवं बीमारी का ताण्डव नृत्य स्थान-स्थान पर छा गया। लगभग दो करोड़ लोग कालकवलित हो गए। **विदेशी शक्तियों को युद्ध क्षति एवं विद्रोह का दमन करने के लिए चीन की सरकार को विदेशी शक्तियों को जो अपार धनराशि देनी पड़ी उससे चीन की आर्थिक स्थिति चरमरा गई।** मंचू सरकार की दयनीय स्थिति ने प्रान्तीय अधिकारियों को संगठित होने में सहायता दी। अब छोटी-छोटी बात के लिए मंचू सरकार प्रान्तीय अधिकारियों की सेना पर निर्भर हो गई। इससे शक्ति केन्द्र के हाथ से निकलकर प्रान्तीय अधिकारियों के पास पहुंच गई। **फलस्वरूप प्रान्तीय अधिकारी निरंकुश एवं उद्दण्ड हो गए।** जनता के सम्मुख मंचू सरकार की हीन स्थिति स्पष्ट हो गई और अब वह ऐसी सरकार की समाप्ति के लिए कृत संकल्प हो गई। विनाके ने ठीक ही

लिखा है, "**यद्यपि यह विद्रोह असफल हो गया, परन्तु इसके दूरगामी परिणामों ने मंचू वंश का पतन प्रारम्भ कर दिया।**"[1]

इस प्रकार उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में चीन में मंचू प्रशासन के विरोध में जिस बॉक्सर विद्रोह ने जन्म लिया वह कुचल तो दिया गया, परन्तु इसके परिणाम दूरगामी सिद्ध हुए। **बॉक्सर विद्रोह की असफलता ने एक ऐसा वर्ग उत्पन्न कर दिया जो कि विद्रोह की असफलता का मूल कारण चीनी जनता का जागरूक न होना मानता था।** इस प्रकार की विचारधारा रखने वाले वर्ग ने किसी भी विद्रोह से पहले चीनी जनता में जागरुकता को आवश्यक बतलाया और यह स्पष्ट किया कि चीन में जागरुकता के लिए सुधार अपेक्षित हैं। **अतः अब एक नया दौर आरम्भ हुआ जिसे सुधार आन्दोलन के रूप में जाना जाता है।**